डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 अप्रैल 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✿ बानी

वर्ष - आठवां | अंक-बारहवां | अप्रैल-2011 | मासिक पत्रिका

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
मो. 9950 55 66 71

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
मो. 9928 92 53 04

अनुवादक
मास्टर प्रताप सिंह

संपादकीय सहयोगी
रेनू सचदेवा
सुमन आनंद
परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक – मुद्रक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से मुद्रित व 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर– 335001 (राजस्थान) से प्रकाशित

सन्तबानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंह नगर
जिला–श्री गंगानगर (राज.)

सच्ची सन्त 6
परम सन्त सावन सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

महात्मा 9
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी. एस.आश्रम राजस्थान)

सुपात्र को ही दया की प्राप्ति 29
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी. एस.आश्रम राजस्थान)

सवाल-जवाब 39
सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
(16 पी. एस.आश्रम राजस्थान)

धन्य अजायब 50
दिल्ली में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 109 | Website : www.ajaibbani.org

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतगुरु सावन शाह अमृत बरस रेहा

सतगुरु सावन शाह, अमृत बरस रेहा, गुरु प्यारे, असीं आऐ हां तेरे दवारे,(2)

1. सच्चे नाम दियां झड़ियां लाईयां, रूहां सच्चखंड विच पुचाईयां, (2)
लख–लख वारे जावां, बलिहारे जावां सतगुरु प्यारे, असीं आऐ .....

2. सावन सच्चयां तूं चरनी ला लै, गुनाहागारां नूं आन बचा लै, (2)
कई जन्मां तो उक्के[1], तेरे दर ते झुके, करमां दे मारे, असीं आऐ .....

3. सावन बण के नूर बरसाया, कृपाल कदी बण आया, (2)
रूहां तार दयो, तपदे ठार दयो, सावन प्यारे, असीं आऐ .....

4. सावन वसया फुल्ल तां टहक रहे, समय–समय सिर आ के महक रहे, (2)
दया मेहर करो, खाली झोली भरो, जयमल जी दे सितारे, असीं आऐ .....

5. असीं दुःखिऐ हां काल ने घेरे, बक्शो सतगुरु जीव हां तेरे, (2)
असीं मैल भरे, उज्जल कौन करे, तेरे बिना प्यारे, असीं आऐ .....

6. सच्चया सावन सुण फरियादां, दास 'अजायब' करे तेरियां यादां, (2)
सतसंग सोहे[2], बारिश नाम दी होऐ, तेरे सहारे, असीं आऐ .....

7. अमृत नाम प्रवाह चलाया, सानूं भुल्लयां नूं रस्ते पाया, (2)
असीं जीव बुरे, औजड़[3] पै के तुरे, औगुणहारे, असीं आऐ .....

8. पिता काबुल सिंह दे प्यारे, माता जीवनी दे राज दुलारे, (2)
भांबड़[4] भख रहे सी, जीव मच[5] रहे सी, आ के ठारे, असीं आऐ .....

9. करे दास 'अजायब' पुकारां, सावन कृपाल कदीं ना विसारां, (2)
मैनूं मदद तेरी, पैज[6] रख लईं मेरी, 'अजायब' दास पुकारे, असीं आऐ .....

कठिन शब्दों के अर्थ ——

1. उक्के – ऊब जाना 2. सोहे – शोभा देना 3. औजड़ – रास्ते से भटकना 4. भांबड़ – आग की लपटें
5. मच – जलना 6. पैज – लाज

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

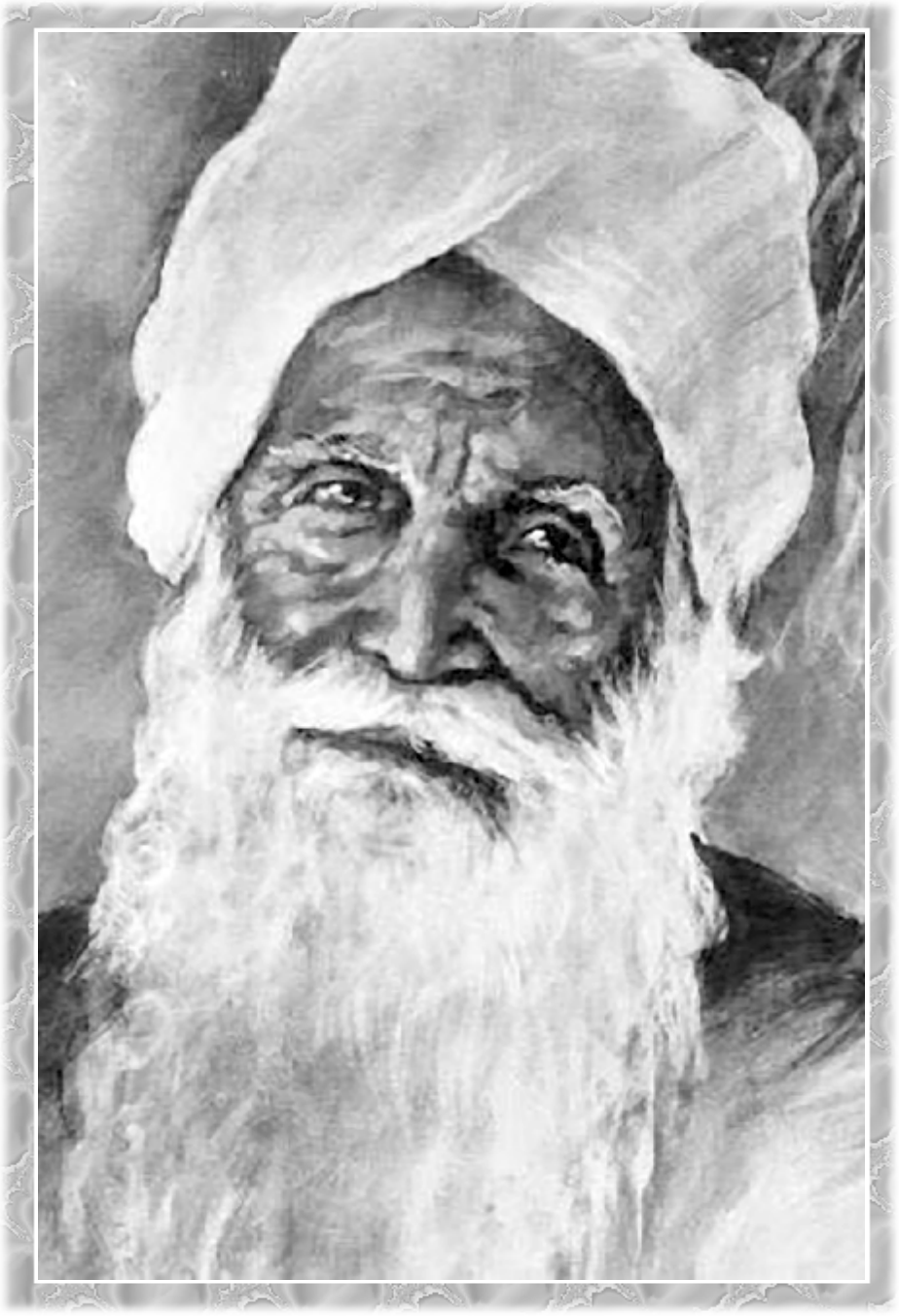

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सच्ची सन्त

राबिया बसरी एक महान सन्त थी। वह जवानी में एक बहुत खूबसूरत लड़की थी। उसकी सुंदरता की वजह से चोरों ने उसका अपहरण करके उसे वेश्या के घर के मालिक को बेच दिया। वहाँ उससे वही काम करवाने की अपेक्षा की जो वहाँ पर रह रही दूसरी औरतें कर रही थी।

उस वातावरण में जब पहली रात एक पुरुष को उसके कमरे में भेजा गया तो राबिया बसरी ने उससे बातचीत शुरू करते हुए कहा, ''आप जैसे सुंदर युवक को देखकर खुशी हुई। आप आराम से कुर्सी पर बैठें अगर आपकी इज़ाज़त हो तो हम मिलकर कुछ समय के लिए परमात्मा से प्रार्थना कर सकते हैं।'' वह युवक यह सब देखकर हैरान हुआ फिर राबिया बसरी के पास बैठ गया और दोनों ने मिलकर परमात्मा के आगे प्रार्थना की।

राबिया बसरी ने उस युवक से कहा, ''अगर आपको ऐतराज़ न हो तो मैं आपको याद दिलाना चाहती हूँ कि एक दिन आपने मर जाना है। आपके मन में जो पाप है यह पाप आपको नर्क की अग्नि में ले जाएगा। आप यह सोच लें कि आप यह पाप करके नर्क की अग्नि में कूदना चाहते हैं या इस दुष्कर्म से बचना चाहते हैं?''

उस युवक ने बहुत हैरान होकर कहा, ''आप एक बहुत अच्छी और धार्मिक औरत हैं, आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं आज से आपको अपना गुरु मानता हूँ और आपके साथ वायदा करता हूँ कि मैं कभी भी इस तरह के दुष्कर्म के लिए किसी ऐसे घर में नहीं जाऊँगा।''

जैसे–जैसे दिन बीतते गए अनेकों पुरुषों को राबिया बसरी के कमरे में भेजा गया। राबिया ने सबको उसी तरह बदल दिया जैसे पहले पुरुष को बदला था। उस घर का मालिक यह सोचने पर मजबूर हो गया कि यह कैसे

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सच्ची सन्त

हो रहा है कि जो पुरुष इस लड़की के पास जाता है वह फिर वापिस नहीं आता। यह लड़की बहुत सुंदर है पुरुषों को इसकी तरफ इस तरह मंडराना चाहिए जैसे ज्योति पर पतंगे मंडराते हैं।

इस रहस्य को जानने के लिए एक रात उस घर का मालिक और उसकी पत्नी ऐसी जगह छिप गए जहाँ से राबिया के कमरे पर नज़र रखी जा सके और यह जाना जा सके कि राबिया अपने पास आने वाले पुरुषों के साथ किस तरह का व्यवहार करती है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जैसे ही एक पुरुष राबिया के कमरे में दाखिल हुआ तो राबिया ने उससे कहा, ''नमस्कार मित्र! यहाँ आपका स्वागत है। मैं इस अपवित्र घर में सदा सर्वशक्तिमान परमात्मा को याद रखती हूँ क्या आप इस बात से सहमत नहीं हो?'' उस पुरुष को राबिया की यह बात माननी पड़ी और उस पुरुष ने चिढ़ते हुए कहा, ''हाँ! हमें पुरोहितों ने यह सब बताया है।''

यहाँ हर तरफ बुराई है लेकिन मैं यह कभी नहीं भूलती कि परमात्मा यहाँ होने वाली बुराईयों को देख रहा है और न्याय भी कर रहा है। इस घर में जितने भी लोग कुछ समय की खुशी प्राप्त करने के लिए आते हैं उन्हें नर्क की यातनाओं से गुजरना पड़ेगा अगर आप भी चाहें तो ऐसा कर सकते हैं। हे मित्र! हमें यह इंसानी जामा भजन–सिमरन करके परमात्मा को पहचानने के लिए मिला है लेकिन हम जानवरों वाली हरकतें करके इस कीमती जामें को खराब कर रहे हैं।

उस पुरुष ने भी दूसरे पुरुषों की तरह राबिया बसरी के वचनों की सच्चाई को समझा। अपने मन के अंदर के पापों को जानते हुए राबिया बसरी के चरणों में गिर पड़ा और रोते–गिड़गिड़ाते हुए उससे क्षमा याचना करने लगा। राबिया बसरी के ऐसे स्पष्ट वचनों को सुनकर घर के मालिक और उसकी कठोर पत्नी छुपे हुए स्थान से बाहर आ गए और अपने अनगिनत पापों के लिए रोने लगे।

उस कठोर औरत ने राबिया बसरी के चरणों में गिरकर कहा, ''तुम एक धार्मिक और पवित्र लड़की हो हमने तुम्हारें लिए बुरा सोचा था लेकिन तुम एक **सच्ची सन्त** हो। तुम यह अपवित्र घर छोड़कर जल्दी से यहाँ से चली जाओ। जहाँ तक हमारा सवाल है हम यह समझ गए हैं कि हमने बहुत बुरा काम किया है लेकिन अब हमारी आँखें खुल गई हैं परमात्मा हमारी जिंदगी बदल देगा।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

महात्मा

कबीर साहब की बानी

जयपुर

परमात्मा गुरुदेव सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने *सुखमनी साहब*[1] में साधु–सन्तों की बहुत महिमा गाई है। साधु–सन्तों ने साधना की होती है वे मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाकर अपनी आत्मा से सब मैलें उतार लेते है; ऐसी महान आत्माएं पवित्र होती हैं वे जीते जी मुक्ति प्राप्त कर चुकी होती हैं।

जो आत्माएं साधु–सन्तों के सम्पर्क में आती हैं वे उन्हें भी मुक्ति प्राप्त करने की सच्ची युक्ति समझाते हैं। साधु–सन्त हमें सिर्फ युक्ति ही नहीं बताते बल्कि इस मार्ग पर चलने में हमारी मदद भी करते हैं। ऐसे सन्त–**महात्मा** दुनियां में रहते हुए परमात्मा के साथ जुड़े होते हैं। उनके अंदर परमात्मा ने अपने 'शब्द' का 'नाम' का घर कर लिया होता है; वे 'नाम' जपकर नाम रूप ही हो गए होते हैं।

ऐसे **महात्मा** परमात्मा होते हुए भी संसार में आकर यह जरूर कहते हैं कि हम परमात्मा के दास हैं परमात्मा के प्यारे बच्चे हैं इसलिए ऐसे महात्मा के दर्शन कर लेना परमात्मा का दर्शन कर लेना होता है, ऐसे महात्मा की संगत में बैठना परमात्मा की संगत में ही बैठना है।

जब परमात्मा हम पर अपनी पूर्ण दया करे तभी हम ऐसे महात्मा की संगत में बैठ सकते हैं। संगत में सिर्फ तन लेकर बैठने से ही हमारा मकसद पूरा नहीं होता; असली संगत में वही बैठते हैं जो तन–मन से अपने आपको भूलकर दर्शनों में मग्न हो जाते हैं। **महात्मा** जो कुछ बोलते हैं हम उस पर

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पूरा–पूरा अमल करते हैं। ऐसे महात्मा संसार में वैर–द्वैत भाव से ऊपर उठे होते हैं वे किसी की निन्दा–चुगली करने में विश्वास नहीं करते। वे न खुद निन्दा–चुगली करते हैं और न ही अपने सेवकों को किसी की निन्दा या किसी से नफरत करने की इज़ाज़त देते हैं।

ऐसे महात्माओं की किसी समाज के साथ कोई द्वैत भावना नहीं होती। वे सब समाजों को अपनी समझते हैं, वे सब मुल्कों को अपना मुल्क समझते हैं क्योंकि बुराई मन में होती है लेकिन सन्तों की नज़र आत्मा पर होती है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

सन्त सभा कोट गुर पूरे, धुर मस्तक लेख लिखाए।

जैसे हमारी सृजना से पहले हमारे कर्मों में सुख–दुख, गरीबी–अमीरी, बीमारी–तंदरूस्ती की प्रालब्ध बन जाती है, इसी तरह अगर हमारे कर्मों में सन्तों की जितनी संगत लिखी है वह पहले से ही मुकर्रर होती है। हर आदमी कोशिश करता है कि मैं महात्मा के सतसंग में जाऊं अगर हम पर परमात्मा की दया न हो तो हम पूर्ण **महात्मा** के सतसंग में नहीं जा सकते। ऐसे महात्मा का बोल कुदरत के नियमों के मुताबिक होता है। चाहे ब्रह्मांड पलट जाए लेकिन सन्त का वचन बेकार नहीं जाता।

ऐसे **महात्मा** संसार में किसी को बददुआ देने डराने या धमकाने के लिए नहीं आते वे किसी के ऊपर अपना बोझ भी नहीं लादते। ऐसे महात्मा जीव के सच्चे मित्र, सच्चे हितैषी होते हैं।

आज मैं आपके आगे कबीर साहब का छोटा सा शब्द साध की महिमा रखूंगा जो गौर से सुनने वाला है। कल मैं सेवक के लक्षण बयान करूंगा कि कौन सेवक है सेवक में क्या गुण होते हैं और सेवक को क्या मिलता है? साध कौन है कौन उनकी सोहबत में आता है और साध की सोहबत में जाने का क्या फायदा है? गौर से शब्द को सुनें

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कबीर संगत साध की, हरे और की ब्याध।
संगत बुरी असाध की, आठों पहर उपाध।।

कबीर साहब कहते हैं, ''साधु की संगत में जाने से हमारे अंदर मालिक से मिलने का शौक विरह और तड़प पैदा होती है। हम इस दुखों की नगरी में बुरी तरह से घिर चुके हैं पता नहीं हमें परमात्मा से बिछड़े हुए कितने जन्म हो गए हैं!'' आज हमें अपने पिछले जामें याद नहीं हम कितनी बार किसी के बच्चे, कितनी बार किसी के पिता, कितनी बार किसी के पति या पत्नियां बन चुके हैं; कितनी बार हम सर्प बनकर संसार में रेंगते रहे हैं या पक्षी बनकर आकाश में उड़ते रहे हैं।

जब हमें पिछले घर याद नहीं, बच्चे याद नहीं अगर कोई ऐसा भी हो जिसे पिछली अन्तर्यामिता है वह आज उस घर में दाखिल होकर तो देखे क्या वे लोग उसे अंदर आने देंगे? जब हमें पिछले बाल–बच्चे, घर–बार याद नहीं तो आज हम जिन्हें अपना बना रहे हैं क्या वे हमें याद रहेंगे?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आज हम जिस घर में इंसान के जामें में हैं पता नहीं कल उस घर में बछड़ा बनकर पैदा होगें या कुत्ता बनकर उस घर की रखवाली करने लग जाएंगे।''

गुरु नानकदेव जी के जीवन की एक घटना है कि आप एक जमींदार के पास जाया करते थे, वह आपका नामलेवा अच्छा प्रेमी था। आपने उस जमींदार से कहा कि भजन करना चाहिए। जमींदार ने कहा, ''अभी मेरे बच्चे छोटे हैं बड़े हो जाएं मैं फिर भजन किया करूंगा।'' जब उस जमींदार के बच्चे बड़े हो गए उन बच्चों की शादियाँ भी हो गई तब गुरु नानकदेव जी ने फिर याद दिलाया अब तो तुम्हें भजन करना चाहिए। जमींदार ने कहा, ''आप जो कह रहे हैं मैं समझ रहा हूँ। ये बच्चे रात को सो जाते हैं इन्हें घर की सुध–बुध नहीं, मैं रात को जागकर घर की रखवाली करता हूँ।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

वह जमींदार उस घर में कुत्ता बनकर पैदा हुआ। सन्तों के सेवक को काल ग्रहण ही नहीं करता, अगर ऐसी भूल हो भी जाए या उस सेवक के बुरे कर्म हों तो उसका जीवन गुरु के हाथ में होता है अगर बादशाह का लड़का कोई गलती करे तो बादशाह उसे भी योग्य दंड देता है। सन्तों के सेवक को यह छूट नहीं होती कि 'नाम' लेने के बाद बुराई करने लग जाए।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि आगे के लिए बुरा कर्म न करें। अगर करेंगे तो यह आपका नया कर्म बन जाएगा जिसका भुगतान आपको करना होगा या आपके गुरु को करना होगा काल माफ नहीं करता। गुरु नानकदेव जी को बहुत कष्ट हुआ आप एक रात को उसके पास गए और उससे कहा कि तू अब बहुत तकलीफ में है। उसने कहा कि मेरे बच्चों की अभी भी ऐसी ही आदत है, ये सोए रहते हैं मेरी बहुऐं घर को नहीं संभालती। बर्तनों को उसी तरह छोड़कर चली जाती हैं। मैं दरवाज़े पर बैठा सारी–सारी रात भौंकता रहता हूँ किसी को भी घर में घुसने नहीं देता।

हमें पता है अगर हम चारपाई पर लेटे रहें तो हमारे शरीर पर निशान पड़ जाते हैं। उस कुत्ते के शरीर में कीड़े पड़ गए वह बड़ी मुश्किल से मक्खियों से बचता हुआ अंदर घुसकर अपनी जान बचाने लगा। आखिर उसका कर्म पूरा हुआ वह संसार छोड़ गया और सर्प की योनि में गया क्योंकि उसकी ममता उसी घर में थी। गुरुबानी में आता है:

अंत समय जे लड़का सिमरे ऐसी चिन्ता में जे मरे।
सर्प योनि बल बल उतरे।

आप जिसे याद करेंगे आपको उसी घर में आना पड़ेगा। घर के सभी लोग छोटे बच्चे को छोड़कर किसी काम से बाहर गए हुए थे। छोटा बच्चा रोने लगा बेशक वह सर्प की योनि में था; लेकिन वह उस घर का बड़ा बुजुर्ग था। ममता की वजह से वह उस बच्चे के रोने को सहन नहीं कर सका। उस बच्चे को चुप कराने लगा इतने में घर के लोग आ गए। आपको

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पता है अगर हम अपने बच्चे के पास सर्प देख लें तो हमारे होश उड़ जाते हैं घर के लोगों ने जल्दी से डंडा उठाया और उस सर्प को मार दिया कि अगर हम समय पर नहीं पहुँचते तो यह सर्प बच्चे को खा जाता। हमारे हिन्दुस्तान में रिवाज है अगर सर्प दिखाई दे जाए बेशक वह हमारे ऊपर हमला करे या न करे हम उसे फौरन मार देते हैं। गुरु नानकदेव कहते हैं:

बिष्टा के कीड़े बिष्टा में ही समाहे।

फिर वह उस घर की नाली में कीड़ा बनकर पैदा हुआ। गुरु नानकदेव जी और मरदाना बैठे थे। गुरु नानक जी को परेशान देखकर मरदाना ने आपसे पूछा क्या बात है? गुरु नानक जी ने कहा कि हमारा वह सेवक गंदी नाली में कीड़ा बनकर रह रहा है। आखिर गुरु नानकदेव जी मरदाना को लेकर वहाँ गए और मरदाना से कहा कि तू नाली में हाथ डालकर इसे बाहर निकाल। कीड़े को बाहर निकाला तो उसने शरीर छोड़ दिया। आप सोचकर देखें! वह कितनी योनियों में से गुजरा और उसकी क्या हालत हुई? कबीर साहब के समय में भी ऐसी ही एक घटना घटी थी।

जब हम **महात्माओं** की संगत में जाते हैं तो वे हमें परमात्मा से मिलने के फायदे और साधन बताते हैं कि आप परमार्थ में किसी सन्त–महात्मा के जरिए ही तरक्की कर सकते हैं, अंदर जाने का भेद प्राप्त कर सकते हैं। साधु की संगत हमारे अंदर से बुरे कर्मों का सफाया कर देती है।

गुरु का शब्द काटे कोट कर्म।

रामानंद की हिस्ट्री में आता है कि पहले वह पत्थर पूजक थे, रीति–रिवाज और कर्मकांड में लगे हुए थे। जब आपको रूहानियत का पता लगा आपके दिल में उमंग उठी कि प्रभु की पूजा करूँ:

कत जाईया रे घर लागो रंग, एक दिन मन भई उमंग।
रस चोऐ चंदन बहो सुगंध।
पूजन चली ब्रह्म ठाए सो ब्रह्म गतह सो गुरु मन ही माहे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पूजा की सारी सामग्री चंदन वगैरहा ले लिया, पूजा करने की सोच रहे थे लेकिन जब गुरु मिला उसने कहा कि परमात्मा तेरे घर में है। गुरु के कहे मुताबिक अंदर तवज्जो दी कि अब कहाँ जाऊं! मन पिंगला हो गया है। बाहर की भटकना खत्म हो गई है अब मेरे घर में ही रंग लग गया है परमात्मा प्रकट हो गया है।

आप बाहर कितने भी अच्छे कर्म जप–तप, पूजा–पाठ कर लें ऐसा नहीं कि हमें इनसे कुछ नहीं मिलता। हम जो भला बुरा करते हैं उसका फल जरूर मिलता है। हम बुरा कर्म करते हैं तो नर्क और चौरासी लाख योनियों में चले जाते हैं अगर नेक कर्म करते हैं तो हमारे हाथ में से झाड़ू निकल जाता है हुकूमत की बागडोर मिल जाती है; झोपड़ी से बिस्तर उठाकर महल में लगा लेते हैं; ज्यादा से ज्यादा स्वर्गों बैकुंठों में चले जाते हैं। जब हमारे पुण्यों की मियाद खत्म हो जाती है तो हमे फिर संसार में आना पड़ता है क्योंकि हुकूमत हासिल करके हमें कौन सी शान्ति मिलती है? हुकूमत भी सूलों की सेज होती है।

आप देख लें! जब हुकूमत मिलती है तो लोग गले में फूलों के हार डालते हैं हम फूले नहीं समाते लेकिन जब दूसरी पार्टी का जोर पड़ता है तो वही लोग अखबारों में मिट्टी पलीत करनी शुरू कर देते हैं। रातों रात तख्ता पलट जाता है वही लोग गोलियों का निशाना बना देते हैं। जिस हुकूमत को हम सुखों की सेज समझते थे वह भी दुखों का घर है।

कबीर साहब हमें किसी कमाई वाले **महात्मा** की संगत में जाने का उपदेश करते हैं अगर हम बुरी संगत में जाते हैं तो हम आठों पहर बुरा सोचते हैं। जुएबाजों की संगत में जाएंगे तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाएगी, चुगली करने वालों की संगत में जाएंगे तो हमें चुगली करने की आदत पड़ जाएगी, शराबियों के पास बैठेंगे तो शराब पीने की आदत पड़ जाएगी; चोरों के पास बैठेंगे तो चोरी करने की आदत पड़ जाएगी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महात्मा

कबीर संगत साध की, जौ की भूसी खाय।
खीर खांड भोजन मिले, साकत संग न जाय।।

अब कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''अगर साधु की संगत में जाकर चाहे हमें खुश्क टुकड़े खाने को मिलें इसके बनस्पित बुरे लोगों की संगत में चाहे हमें हलुआ, खीर और अच्छे से अच्छे भोजन मिलें उनकी संगत में दुख है; महात्मा की संगत में सुख है। सन्त–महात्मा हमें 'नाम' जपने भक्ति करने और मालिक के साथ जुड़ने का उपदेश देते हैं। हम जितनी देर महात्मा की संगत में बैठते हैं, हमारा मन शान्त रहता है; बाद में भी भूले मन को उनके वचन याद रहते हैं कि हमने सतसंग में क्या सुना था। बुरी संगत में चाहे आपको अच्छे से अच्छा भोजन मिले, अच्छे से अच्छे बिस्तर मिलें तो यह दुखों की सेज है और दुखों का खाना है।''

साध बड़े परमारथी, धन ज्यों बरसें आय।
तपन बुझावें और की, अपनो पारस लाय।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सन्त–महात्मा बहुत उपकारी होते हैं। जिस तरह परमात्मा ठंड देने के लिए अच्छी फसलों के लिए बिना किसी मुआवजे के बारिश बरसाता है। पारस लोहे को सोना बना देता है लेकिन अपनी तरह पारस नहीं बना सकता। सन्त–महात्मा इतने शीतल होते हैं कि जिसे अपने नाम का पारस छुआते हैं उसे अपने जैसा सन्त बना लेते हैं।

सन्त–**महात्मा** परमार्थी होते हैं वे जब भी संसार में आते हैं सतसंग के जरिए गरीब–अमीर, औरत–मर्द सबको परमार्थ का होका देते हैं बेशक उन्हें संदेश देने में कितनी भी तकलीफ क्यों न हो! कबीर साहब कहते हैं:

राम बुलावा भेजया, दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग है सो बैकुंठ न होय।

कबीर संगत साध की, ज्यों गंधी की बास।
जो कुछ गंधी दे नहीं, तो भी बास सुबास।।

कबीर साहब कहते हैं कि इत्र लगाने वाला अगर आपके पास से गुजर जाए तो महक आती है इसी तरह सन्त–महात्मा हमें अपनी बख्शीश से खाली नहीं रखते क्योंकि वे दया लेकर आते हैं गरीब नवाज होते हैं, सदैव बख्शीश करते हैं। जब तक बच्चा समझदार नहीं होता, माता–पिता अपना कमाया हुआ धन बच्चे के हवाले इसलिए नहीं करते कि इसे कद्र नहीं, यह धन को खराब कर देगा। जब बच्चा काबिल और बड़ा हो जाता है तो माता–पिता उसका हिस्सा आसानी से दे देते हैं बल्कि अपना कमाया हुआ धन भी उसके हवाले कर देते हैं।

इसी तरह हम जो सिमरन दिन–रात करते हैं, सन्त–महात्मा हमारी नाम की पूंजी को व्यर्थ नहीं जाने देते क्योंकि हम भूले बच्चे हैं। थोड़ी सी तकलीफ आने पर परमार्थ का इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं और दिवालिएपन पर ही रहते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि हम सन्तों के पास जाकर भी अपना परमार्थ खराब करते हैं। हम सन्तों से कहते हैं कि आप हमारे कहे अनुसार चलें। हमारी बीमारी, बेरोजगारी दूर करें। जो मियाँ बीबी लड़ते हैं वह भी ठीक करें, लेकिन हमने अपनी जुबान नहीं रोकनी। यह तो हमारी जिम्मेवारी है कि अपने घर में शान्ति बनाए रखें, हमारे बड़े–बुजुर्ग यही शिक्षा देकर गए हैं।

हम यह भी कहते हैं महाराज जी! आप दया करें हमारा पर्दा खोलें आप सोचकर देखें! क्या ये आगे जा सकते हैं? हालांकि सन्त–सतगुरु हमारी मुनासिब मदद करते हैं और नेक राय देते रहते हैं। इत्र वाला इत्र न भी दे तो भी सुगंध आ जाती है।

मैं अपने बारे में बताया करता हूँ कि मुझे दुनियां के बारे में ज्यादा ज्ञान नहीं था क्योंकि मैं हिन्दुस्तान में कम ही घूमा हूँ। मैं हिन्दुस्तान के मशहूर मन्दिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों तक ही गया हूँ। मुझे संसार के बारे में कोई खास जानकारी नहीं थी। मुझे ज्यादातर जानकारी पप्पू से ही मिली है। मैंने यह भी बताया कि बेटा! मुझे ज्यादा चीज़ो का ज्ञान नहीं है।

परमात्मा कृपाल बख्शिंद और समर्थ थे। मैं ऊपर बताकर आया हूँ कि साधु का वचन पलटता नहीं चाहे ब्रह्मांड पलट जाए। जब परमात्मा कृपाल मुझ पर बख्शीश करने लगे तो आपने अपनी मौज में आकर प्यार से कहा, ''तुझे अमेरिकन लोग हवाई जहाजों में सैर करवाएंगे।'' वहाँ बैठे हुए एक आदमी ने कहा कि कोई इन्हें जीप पर भी नहीं चढ़ाता। एक और ने कहा कि महाराज जी को काम लेने की बहुत युक्ति है। महाराज जी ने कहा, ''मैंने जो कुछ कहना था कह दिया है इनमें से महक आएगी वह महक सात समुद्र पार कर जाएगी।'' अगर हम सन्तों को कुलमालिक समझ लें तो हम उनके वचनों पर ऐतबार क्यों न करें?

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब मैं पहली बार दिल्ली गया तब मैं पप्पू फैमिली को नहीं जानता था और न ही मैं किसी से वाकिफ था। दिल्ली में मैंने लोगों से पूछा, ''क्या कोई मुझे जानता है, पहले किसी ने मुझे देखा है? किसी ने पहले मुझे देखा हो या मुझे जानता हो वही हामी भर सकता है। इसी तरह मैं जिस भी मुल्क रोम, इंग्लैंड, कैनेडा, अमेरिका जहाँ भी गया मैंने हर जगह यही पूछा कि कोई हाथ खड़ा करके कहे कि कोई मेरे नाम को या मुझे जानता था? आप देख लें! क्यों ये लोग राजस्थान बार्डर पर खिंचे आए? वह महक ही थी।''

महाराज सावन सिंह जी ने बताया, ''एक बार अप्रैल के दिन थे हम यकायक पहाड़ की चढ़ाई चढ़ रहे थे, आगे से महक आने लगी। हम जैसे–जैसे ऊपर की तरफ चढ़ते गए महक तेज होती गई। दिल में ख्याल आया कि कोई ओहदा भी बढ़ने वाला नहीं, कोई बाल–बच्चे की खुशी भी नहीं यह महक कैसी है? जब हम आगे गए तो वहाँ बहुत कमाई वाला एक मस्ताना फकीर बैठा था। ख्याल आया कि महक इसी में से आ रही है; आँख को आँख पहचानती है। पहलवान को पहलवान पहचानता है।'' उस मस्ताना फकीर ने कहा, ''महक लेने वाला भी कोई–कोई नाक होता है।''

महाराज कृपाल का वाक था, ''यह महक समुद्र पार कर जाएगी।'' हर एक मुल्क से वे आत्माएं खिंची हुई आई जिनकी नाक को महक चढ़ गई। महक लेने वाले नाक विरले–विरले होते हैं। आपको पता है जहाँ भी कोई सतसंग या सभा होती है लोग कितने ही इश्तिहार निकालते हैं अखबारों में छपवाते हैं। इश्तिहारों पर लाखों रूपये खर्च करते हैं। मैं जिस भी मुल्क में जाता हूँ, वहाँ टेलिविजन पर मेरा कोई कार्यक्रम नहीं आएगा न अखबार में इश्तिहार आएगा, न ही किसी चौराहे पर मेरी तस्वीर लगी होगी। फिर भी जिनकी नाक को महक आती है वह खिंचे हुए चले आते हैं।

ऋद्धि सिद्धि मांगूं नहीं, मांगूं तुम पर येहि।
निसदिन दरसन साध का, कहें कबीर मोहिं देहि।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आप कहते हैं, ''जो साधना करके अंदर जाता है, अपनी आत्मा से पर्दे उतार लेता है, जिसके अंदर गुरु का शब्द घर कर लेता है वह गुरु से ऋद्धि सिद्धि कुछ नहीं माँगता।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

ऋद्धि सिद्धि नामे की दासी।

दासी अपने मालिक को खुश करने के लिए कई बार उसके हुक्म के बगैर भी काम करती रहती है। सन्तों के दरबार में तो ऋद्धियां–सिद्धियां हाथ बाँधकर खड़ी हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऋद्धि–सिद्धि माँगना या ऋद्धि–सिद्धि दिखाना इस तरह है जैसे अपनी कमाई उजाड़ कर वेश्या की कमाई खा रहे होते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

क्या नर्क क्या स्वर्ग संतन दोऊ रादे।
हम काहूँ के कांण न कडदे अपने गुरु परसादे।

सन्त ऋद्धियों–सिद्धियों पर थूकते भी नहीं इसलिए वे दर्शन माँगते हैं कि हे सतगुरु! तू मेरे आगे बैठा रह, मैं तेरी मनमोहनी सूरत को देखता रहूँ। पलटू साहब कहते हैं:

ऋद्धि सिद्धि पर न थूके स्वर्ग की आस न हेरी।

निरबैरी निःकामता, स्वामी सेती नेह।
विषयन सों न्यारा रहे, साधन का मत येह।।

कबीर साहब कहते हैं, ''**महात्मा** उसे कहते हैं जिसका किसी के साथ द्वैत–भाव नहीं। साधु सबके साथ प्यार करता है और विषयों से न्यारा रहता है। विषय उसके आगे गुलामी का काम करते हैं।'' आप कबीर साहब का यह शब्द पढ़ते हैं:

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कैद कर रखे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मैं आपको बताया करता हूँ, ''काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। जब हम इससे ऊपर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं वहाँ इनका नामोंनिशान नहीं होता। जो साधना करके पारब्रह्म में चला गया है उसे विषय–विकार क्या कहेंगे?''

कबीर साहब कहते हैं, ''विषय–विकार साधु के पास फटक भी नहीं सकते। जहाँ बाज घर कर लेता है, वहाँ चिड़ियाँ कैसे फटकेंगी? जहाँ 'शब्द' का राज्य हो गया वहाँ विषय–विकारों का क्या काम? जहाँ पुलिस का राज्य है वहाँ चोर कैसे टिक सकते हैं? अगर घर वाला सोया हुआ है तो यह चोरों की मौज है कि वे घर में कोई सामान छोड़ें या न छोड़ें! जब घर का मालिक जाग जाता है तो उन्हें बर्दाश्त नहीं करता वे भाग जाते हैं।''

सिंहों के लहंडे नहीं, हंसों की नहिं पांत।
लालों की नहिं बोरियां, साध न चलें जमात।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हंसों के झुंड नहीं होते हंस बहुत विरले होते हैं। जंगल में शेर भी ज्यादा नहीं होते विरले ही होते हैं इसी तरह साधुओं की जमाते नहीं होती साधु भी विरले होते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जग में उत्तम कढ़िए विरले केई केई।
कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।

प्यारेयो! साधु की गति बहुत भारी, बहुत ऊँची है। मैं बताया करता हूँ कि जब पिछली बार जनगणना हुई तो हिन्दुस्तान में बावन लाख साधुओं की गिनती दर्ज की गई। अगर हम कमाई वाले साधु ढूंढे तो गिनती के चार–पाँच साधु ही निकल आएं तो बहुत है। आमतौर पर हम लोग साधु शब्द के अर्थ को नहीं समझ सकते। यहाँ आकर पढ़े–लिखे लोग भी धोखा खा जाते हैं। हम भगवे कपड़े पहनने वाले को, माँगकर खाने वाले को, अपना बोझ दूसरों पर डालने वाले को साधु–सन्त कहकर ब्यान करते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सिंह साध का एक मत, जीवत ही को खायें।
भाव हीन मिरतक दशा, ताके निकट न जायें।।

कबीर साहब कहते हैं, ''शेर और साधु का एक मत है। शेर मुर्दे को नहीं खाता जीवित को ही खाता है अगर मुर्दा खाता है तो उसे कोई शेर नहीं कह सकता।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''यह बहुत सोच–विचारने की बात है कि गुरु शिष्य से एक पाई भी नहीं लेता लेकिन छोड़ता भी कुछ नहीं। **महात्मा** अपने खर्चे के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता। वह अपने दस नाखूनों की मेहनत से अपना और अपने बाल–बच्चों का पेट पालता है; उसका जीवन एक नमूने का होता है।''

हम लोग मरने से डरते हैं, कहते हैं कि भजन करना मुश्किल है। मैं एक चौधरी की मिसाल दिया करता हूँ कि वह कई साल पहले आश्रम में आया वह बहुत मोटा तगड़ा था। वह लोगों से पूछता रहा, ''जीते जी कैसे मरा जाता है?'' प्रेमियों ने उससे कहा कि बाबा जी आऐंगे तो उनसे पूछ लेना। मैं 'नामदान' देने के लिए जा रहा था। आगे चौधरी साहब तैयार थे। उन्होंने मुझसे कहा कि आप आगे बाद में जाना पहले मुझे यह बताओ कि जीते जी कैसे मरते हैं? मैंने हँसकर कहा, ''मैं यही प्रेक्टिस करवाने के लिए जा रहा हूँ तू भी आ जा।'' बस! चौधरी ने मुश्किल से अपनी जान छुड़वाई वह फिर आश्रम में नहीं आया।

गल्ली किन्हे न पाया।

सन्तमत बातों का मजबून नहीं। साधु भाषा में हमने किस तरह जीते जी मरना है? अपने फैले ख्याल को सिमरन के जरिए पैरों के तले से खींचकर तीसरे तिल पर आना है। जब हमारी सुरत पैरों से खिसक कर गिट्टो तक आती है, तब शुरू–शुरू में दर्द होता है। मैंने पहली दो मंजिलों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

का अभ्यास किया है मुझे पता है कि यह अभ्यास बहुत मुश्किल होता है लेकिन उसके बाद जब हम रोज अभ्यास करते हैं तो अंदर महारत हो जाती है। हम युगों–युगों से इस तन में रहने के आदी है जैसे–जैसे सुरत ऊपर आती है, थोड़ा सा दर्द होता है तो हम उठकर खड़े हो जाते हैं। उसके बाद अभ्यास में नहीं बैठते क्योंकि हम मरने से डरते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मोयां जित घर जाईऐ तित जीवंदेया मर मार।

यह एक नई क्रिया है। हर **महात्मा** ने अपनी ज़िंदगी में यह क्रिया की होती है। बुल्लेशाह जी कहते हैं:

नित नित मरे ते नित नित जिए मेरा नित नित कूच मकान।

महात्मा सुनी सुनाई बातें नहीं करते। वे कहते हैं, ''आओ करो और देखो।'' हम जीते जी मरे हुए के समान हैं। हमें एक दिन थोड़ी सी तकलीफ होती है तो हम भजन नहीं करते। कहते हैं कि भजन करना बहुत मुश्किल है। कई बार मेरे पास सैंकड़ो आदमी आ जाते हैं जो यह कहते हैं कि बाबा जी! यह काम बहुत मुश्किल है। मैं कहता हूँ, ''मुश्किल तो नहीं आपने ही मुश्किल बनाया हुआ है। ऐसी बातें करने वाले प्रेमी यहाँ बैठे हँस रहे हैं।''

रवि का तेज घटे नहीं, जो धन जुड़े घमंड।
साध बचन पलटे नहीं, पलट जाय ब्रह्मांड।।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर बादल यह सोंचे! हम सूरज को ढक लेंगे तो भी सूरज की तपिश कम नहीं होती, बादल जितने भी मंडल में हैं उतनी जगह पर थोड़ी सी तपिश कम हो जाती है। दूसरे इलाके में वही तपिश जोर पकड़ लेती है। इसी तरह अगर हम साधुओं की निन्दा करते हैं उन्हें कष्ट देते हैं तो भी वे अपनी आदत से बाज नहीं आते। जो लोग उनकी निन्दा करते हैं, उन्हें कष्ट देते हैं; वे फिर भी उन पर रहम करते हैं।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब महाराज कृपाल ने मुझे सच्चाई का होका देने के लिए कहा तब मैंने आपके आगे विनती की, ''सच्चे पातशाह! आप समर्थ थे इस दुनियां ने आपके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया, दिन–रात आपकी निन्दा की। मैं तो आपका छोटा सा जीव हूँ मैं यह सब कैसे सहन करूंगा।'' आपने हँसकर मुझे अपने गले से लगाया और कहा, ''कोई नई घटना नहीं घटेगी, जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे?''

सन्त ऐसे असूलों को लेकर चलते हैं। गुरु अर्जुनदेव को गर्म तवे पर बिठाया गया, आपके साथ कई किस्म के जुल्म किए गए लेकिन आपने उन लोगों को बद्दुआ नहीं दी और उस समय यही कहा:

तेरा किआ मीठा लागे।

हे परमात्मा! तेरा किया हुआ मुझे मीठा लगता है। जब क्राईस्ट को काँटों का ताज पहनाया गया, सूली पर चढ़ाने लगे तो आकाशवाणी हुई, अगर तू कहे तो मैं इन्हें सजा दूं? क्राईस्ट ने कहा, ''हे परमात्मा! तू इन्हें मेरी पहचान दे, इन्हें बख्श दे। ये नहीं जानते कि हम कितना बुरा सलूक कर रहे हैं।'' आप देख लें! साधु फिर भी हमारी खातिर दुआ माँगते हैं।

साधु की दया में कोई फर्क नहीं आता। वे फिर भी हम पर रहम करते हैं अगर हम सन्तों को तकलीफ देते हैं फिर भी उनकी दया हमारे ऊपर बरसती है। जो हमारा मित्र हो हमारे दुख को हमसे ज्यादा समझता हो हम उसकी बुराई करें तो इसमें हमारी क्या बड़ाई है?

साध कहावन कठिन है, ज्यों खांडे की धार।
डिगमिगे तो गिर पड़े, निश्चल उतरे पार।।

साधु कहलवाना बहुत मुश्किल है। जैसे खंडे की धार पर चलना बहुत मुश्किल है क्योंकि खंडे की धार बहुत तेज होती है। जो पक्का होकर उस मैदान में निकलता है वह पार हो जाता है और दुनियां में रहते हुए

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मुक्ति प्राप्त कर लेता है जो डाँवाडोल मन से इस तरफ लगते हैं वे गिर जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

फकीरा फकीरी दूर है जैसे पेड़ खजूर।
चढ़ गया ते अमर फल गिर गया ते चकनाचूर।

कम खाना, कम सोना, दुनियां के रसों–कसों से मुँह मोड़ना बहुत मुश्किल है। हमें पहले–पहले ऐसा करना पड़ता है, बाद में गुरु हमें अंदर सच्ची नाम की बड़ाई देता है और शांति देने वाला सच्चा रस भी पिलाता है।

अमृत रस सतगुरु चुवाया, दसवें द्वार प्रकट होए आया।

साधु हमें अमृत का प्याला पिलाने के लिए तैयार बैठा होता है, जो लोग डिगमिग चलते हैं वे गिर जाते हैं।

जौन चाल संसार की, तौन साध की नाहिं।
डिंभ चाल करनी करे, साध कहो मत ताहिं।।

कबीर साहब कहते हैं, ''साध और संसारियों का कभी जोड़ नहीं होता। सन्त–सतगुरु हमें सच्चखंड ले जाना चाहते हैं लेकिन हम लोग दुनियां में ही फँसना चाहते हैं क्योंकि हम दुनियां के रीति–रिवाज में विश्वास रखते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

भक्तां ते संसारियां जोड़ कदे न आया।

सन्त–महात्मा परमात्मा में मिलकर परमात्मा का रूप होने में विश्वास रखते हैं। हम लोग नर्कों–स्वर्गों से डरते हुए भक्ति करते हैं इसलिए हमारा और उनका मिलाप किस तरह हो सकता है? हम तो गुड्डे–गुड़ियों का खेल खेलते हैं। सन्तों की परमात्मा–शब्द गुरु के साथ शादी हो गई है वह अब गुड्डे पटोलो को नहीं संभालते। पलटू साहब कहते हैं:

भगत जगत से वैर है चारे जुग प्रमाण।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शुरू में जब हम भक्ति मार्ग पर लगते हैं तो माता–पिता, भाई–बहन, यार–दोस्त ताने–मेहणे मारते हैं कि तू इतने रूतवे का मालिक है तेरी इतनी जायदाद है तू इतना पढ़ा–लिखा होकर साधुओं के पास जाता है अगर हम कच्चे हैं तो फौरन गिर जाएंगे। इस मत में कामयाब होने के लिए हमें कुछ सहन करना पड़ता है, मान–पदवी का ख्याल छोड़ना पड़ता है। ऐसी अवस्था अख्तियार करनी पड़ती है कि हम दुनियां की निन्दा से डरते हुए परमात्मा की भक्ति से न हटें।

आप कहते हैं कि दुनियां और साधुओं की चाल नहीं मिलती। दुनियादार विषय–विकारों, शराबों–कबाबों में मस्त हैं लेकिन सन्त–महात्मा परमात्मा की भक्ति में मस्त हैं। हम दुनियादार इन घरों की आशा रखते हैं कि हम बार–बार इन घरों में आएं। सन्त–महात्मा कहते हैं, ''हे परमात्मा! तू हम पर मेहर कर; तू हमें अपने घर बुला।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो घर छड्ड गवावणां।
जित्थे जाए तुध वरतना तिसकी चिन्ता नाहें।

जिस घर को छोड़कर चले जाना है मन में उसकी चिन्ता लगी हुई है और जहाँ सदा रहना है उसकी चिन्ता नहीं। दुनियां और साध की चाल का इतना ही फर्क है जितना धरती आसमान का फर्क है। इस शब्द में कबीर साहब ने साधु की महिमा को बहुत अच्छी तरह समझाया है:

जे साधु गाविंद भजन कीर्तन नानक मीत।
णे हू णे छूटे निकट न जायो दूत।

धर्मराज अपने दूतों को हिदायत करता है कि जहाँ कोई सन्त का भजन करता है, जहाँ सन्त का सतसंग होता है तुमने उनके नज़दीक नहीं जाना अगर तुम उनके नज़दीक जाओगे उनके काम में दखल दोगे तो न तुम छूट सकते हो न मैं छूट सकता हूँ। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

साधा शरणी जो पवे सो छुट्टे बद्धा।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अगर यम जीव को बांधकर खड़े हों और नर्क में ले जा रहे हैं फिर भी अगर यह गुरु को याद करता है तो गुरु इसे छुड़ा लेते हैं क्योंकि उन्हें अपने बिरद की लाज है।

महाराज जी कहानी सुनाया करते थे कि एक महाजन ने जमींदार से कर्जा लेना था। वह जमींदार के घर गया और उसका सारा सामान कुर्क कर लिया। जिसके घर में कुछ न छोड़ा हो उसे कष्ट तो होता है। महाजन ने जमींदार को अपना बिस्तर स्टेशन पर छोड़कर आने के लिए कहा। जमींदार ने कहा, ''अब तेरा मेरा क्या ताल्लुक है तूने मुझे कुछ भी माफ नहीं किया।'' महाजन किसी ऐसे आदमी को ढूंढ रहा था जो उसका बिस्तर स्टेशन तक छोड़कर आए।

वहाँ से एक कमाई वाले **महात्मा** निकल रहे थे उन्होंने कहा कि मैं तेरा बिस्तर स्टेशन पर पहुँचा दूँगा। लेकिन शर्त यह है कि रास्ते में तू परमात्मा की कथा करना मैं हुँगारा भरूंगा या मैं कथा करूँगा तू हुँगारा भरना। महाजन ने सोचा इससे अच्छा सौदा क्या होगा यह बिना मजदूरी के मेरा बिस्तर ले जा रहा है। मेरे लिए हूँ हूँ करना क्या मुश्किल है?

महात्मा ने कथा सुनानी शुरू की कि इंसान का जामा बहुत अमोलक है। इंसान का जामा परमात्मा ने हमें एक मौका दिया है, हमें इसमें ऐब पाप नहीं करने चाहिए। हमें सदा परमात्मा का डर रखना चाहिए और परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। जीते जी परमात्मा से मिलना चाहिए। साधुओं की संगत भाग्य से मिलती है अगर साधु की संगत मिल जाए तो इससे पूरा फायदा उठाना चाहिए। महाजन हूं हूं करता जा रहा था उसे क्या पता था कि मैं क्या कर रहा हूँ? आपको पता है कि साधु सतसंग में हमें हमारे ऐब और गलतियां ही बताते हैं।

महाराज जी बताया करते थे कि हमारे ऐब दो तरह के आदमी ही बता सकते हैं। साधु कहानी सुनाकर बताता है और विरोधी खुले तौर पर

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कह देता है। हमे अपने विरोधी की बात का बुरा नहीं मानना चाहिए बल्कि हमारे अंदर जो ऐब हैं उन्हें छोड़ देना चाहिए, उसका धन्यवाद करना चाहिए कि हमें पता नहीं था देख! हमने यह ऐब छोड़ दिया है।

वह महाजन हर बात पर हूँ हूँ करता जा रहा था। सन्त किसी को भी अपनी दया से खाली नहीं रखते। **महात्मा** के दिल में दया उठी वह जानते थे कि यह जल्दी जाने वाला है। महात्मा ने महाजन से कहा, ''तेरी जिंदगी थोड़ी सी है तूने सारी ज़िंदगी में कोई अच्छा काम नहीं किया तेरी सारी ज़िंदगी में सिर्फ यही अच्छा कर्म है कि तूने मेरी संगत की है। तुझे यम पकड़कर ले जाएंगे तुझसे पूछेंगे कि दो घड़ी की संगत का फल पहले लेना है या बाद में लेना है? तू यह फल पहले माँग लेना वे तुझे मेरे पास भेज देंगे, बस फिर मैं जानूं।''

उस समय तो हमारे मन में विश्वास नहीं आता कि इस साधु के पास इतनी पावर है? यह तो मेरा बिस्तर उठाकर ले जा रहा है लेकिन पता तब लगता है जब हम अंदर जाकर **महात्मा** की ताकत को देखते हैं। थोड़े समय बाद महाजन का अंत समय आ गया। धर्मराज ने महाजन से पूछा, ''तेरा सारी जिंदगी में कोई नेक कर्म नहीं है सिर्फ थोड़े समय के लिए किसी साधु की संगत की है, इसका फल पहले लेना है या बाद में लेना है?''

महाजन ने कहा बाद में किसने देखा है। आप साध संगत का फल पहले ही दे दें। यमराज के दूतों ने महाजन से कहा, ''हम तुझे दो घड़ी का समय देते हैं तू साध संगत में चला जा, जब हम इशारा करेंगे तू वापिस आ जाना; हम तो उस सभा में नहीं जा सकते।'' जब दो घड़ी का समय खत्म हो गया तो महाजन मुड़–मुड़कर देखने लगा कि यमदूत खड़े हैं। महात्मा ने पूछा कि तू किधर देख रहा है? महाजन ने कहा जिनसे वायदा किया था वे हाथ हिलाकर बुला रहे हैं। **महात्मा** ने कहा कि तू चुप करके बैठा रह।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महात्मा

सन्तों का शरीर तो संसार में होता है। वे अंदर बंधे हुए सेवकों को यमों से छुड़वाते हैं; ये उनकी बड़ाई है महिमा है। सन्तों की संगत भाग्य से मिलती है, वे हमें यमों के हवाले नहीं होने देते। कबीर साहब कहते हैं:

जेंह घर साध न सेविए हर की पूजा नाहें।
ऐह घर मरहट सारखे भूत वसे तिस माहें।

जिस घर में साधु महात्मा का दिया हुआ भजन नहीं किया जाता उस घर के सब लोग भूतों के समान हैं।

कबीर साहब ने इस शब्द में हमें प्यार से समझाया कि कमाई वाले **महात्मा** की संगत का क्या फल मिलता है, बुरे लोगों की संगत में जाकर हमारा कितना नुकसान होता है? बुरे आदमी की संगत करने से परमार्थ की जड़ ही कट जाती है। कमाई वाले **महात्मा** की संगत तब मिलती है, जब परमात्मा हम पर अपनी पूर्ण कृपा कर दे, अपनी मेहर कर दे।

सन्त सभा कोट गुर पूरे धुर मस्तक लेख लिखाए।
जन नानक कंत रंगीला पाया फिर दुख न लागे आए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

25 फरवरी 1989

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सुपात्र को ही दया की प्राप्ति

वारां – भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

तीरथि पुरबि संजोग लोग चहु कुंडाँ दे आदि जुड़ंदे।
चारि वरन छिअ दरसनाँ नामु दानु इसनानु करंदे।
जप तप संजम होम जग बरत नेम करि वेद सुणंदे।

मैंने आप लोगों को पहले भी बताया है कि जिस समय मेरे प्यारे गुरु कृपाल ने चोला छोड़ा वह घड़ी बहुत कठिन थी, उस समय प्यारे भाई–बहन आपस में झगड़ रहे थे। महात्मा किसी के लिए अपने मन में द्वेष नहीं रखते और किसी की निन्दा नहीं करते; वे सभी से प्यार करते हैं।

इस समय मेरी सेहत ज्यादा काम करने की इज़ाज़त नहीं दे रही है तो भी मैं इस बानी पर सतसंग देने के लिए प्रेरित हुआ हूँ। आप जानते हैं कि हमारे प्यारे सतगुरु ने कितनी कठिन मेहनत की; हमें डायरी रखने के लिए कहा ताकि हम अपने काम का लेखा–जोखा रख सकें और अपने जीवन को सुधार सकें। आपका सच्चा हमदर्द सच्चा दोस्त केवल गुरु है जो आपसे कुछ नहीं माँगता, बिना कुछ लिए आपके लिए काम करता है।

मैं आपको अक्सर बताया करता हूँ कि सन्तमत परियों की कहानी नहीं, सन्तमत अपने आपको सुधारने का मत है। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''हमें रोजाना अपने काम का हिसाब रखना है और अपने आपमें सुधार करना है।''

आज मैं जिस 'वार' पर सतसंग देने जा रहा हूँ इसकी बानी एक डायरी की तरह है। हर महात्मा के समझाने का अपना–अपना तरीका होता है। हम रोज भाई गुरदास की वारों को सुनें और अपने जीवन को सन्तों की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शिक्षाओं के मुताबिक ढ़ालें अगर हम 'वार' के अनुसार अपना लेखा–जोखा करेंगे तो यह डायरी का काम करेगी।

अक्सर जहाँ महात्मा ने जन्म लिया हो, सत्संग किया हो या वह महात्मा वहाँ रहा हो; वह स्थान एक तीर्थस्थान बन जाता है। महात्मा के चोला छोड़ देने के बाद लोग उनकी याद में मकबरे बना लेते हैं, वहाँ पूजा करने लग जाते हैं। फिर लोग ऐसे तीर्थ स्थान पर साल में एक विशेष दिन इकट्ठे होते हैं। इसलिए भाई गुरदास जी कहते हैं, ''चारों वर्णों के लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, उदासी व अन्य भक्त लोग भी वहाँ बिना किसी भेदभाव के इकट्ठे होकर पर्व मनाते हैं।''

गिआन धिआन सिमरण जुगति देवी देवसथान पूजंदे।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''लोग देवी–देवताओं के स्थान पर जाकर पूजा करते हैं, उन्हें सम्मान देते हैं। वहाँ लोग आपस में परमात्मा के बारे में चर्चा करते हैं, वाद–विवाद करते हैं; इस तरह बहुत सा समय बिताते हैं।''

बगा बगे कपड़े करि समाधि अपराधि निवंदे।

झूठे भक्त कहलवाने वाले लोग भी ऐसे स्थानों पर जाते हैं। वे सच्चे भक्तों की तरह कपड़े पहनते हैं, लेकिन अंदर से कपट से भरे होते हैं। ऐसे लोग वहाँ जाकर महात्मा बनने का बहाना करते हैं, सफेद कपड़े पहनते हैं और लोगों को प्रभावित करने के लिए समाधि लगाते हैं लेकिन उनका मकसद केवल धोखा देना होता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कोई ओढें नील कोई पहने सफेद।

ऐसे लोग कपड़े तो सफेद पहनते हैं लेकिन उनके हृदय कठोर और छल से भरे होते हैं। बगुला भी हंस की तरह सफेद होता है। बगुला एक पैर पर खड़े होकर यह दिखाना चाहता है कि वह परमात्मा की भक्ति कर रहा है लेकिन मछली को देखते ही उसे खा जाता है। कबीर साहब कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

माथे तिलक हथ माला बाना, लोगन राम खिलौना जाना।

ऐसे लोग माथे पर सिंदूर का तिलक लगाते हैं। हाथ में माला और कमण्डल रखते हैं लेकिन उन्होंने परमात्मा को एक खिलौना बना रखा है। आप उन्हें परमात्मा का सच्चा भक्त मत समझें; वे बनारस के ठग्ग होते हैं।

महात्मा चरणदास जी कहते हैं, ''बेशक बगुला सुंदर और सफेद शरीर रखता है एक पैर पर खड़ा रहता है, वह परमात्मा से कैसे मिल सकता है क्योंकि उसे सदैव मछली की लालसा रहती है।''

सिक्ख इतिहास में गुरु नानकदेव जी की एक मशहूर कहानी है। आप एक बार कुरुक्षेत्र के तीर्थस्थान पर गए। आपने वहाँ देखा कि वहाँ बहुत से लोग महात्मा होने का ढोंग कर रहे थे। असल में वे बगुले की तरह थे। आपने एक आदमी को समाधि लगाए हुए देखा जो आँखें बंद किए हुए था। वह थोड़ी देर के बाद आँखें खोलकर देख लेता कि उसके सामने रखा हुआ कटोरा है या नहीं! उस कटोरे में आने–जाने वाले लोग पैसे डालते थे।

बाला उस आदमी से बहुत प्रभावित हुआ। उसने गुरु नानकदेव जी से कहा कि यह बहुत बड़ा भक्त है। यह सदा आँखें बंद रखता है, बस थोड़ी देर के लिए आँखें खोलता है। गुरु नानकदेव जी ने बाला से कहा, ''यह आदमी लोगों को प्रभावित करने के लिए आँखें बंद रखता है ताकि लोग इसके कटोरे में पैसे चढ़ाएं और आँखें खोलकर यह देखता है कि क्या कटोरा यहीं है? अगर तुम सच्चाई जानना चाहते हो तो इस कटोरे को हटाकर इसके पीछे रख दो फिर हम देखते हैं कि क्या होता है?''

जब उस आदमी ने आँखें खोली तो उसका कटोरा वहाँ नहीं था। वह गुरु नानकदेव जी और बाला के साथ लड़ने लगा कि आप लोगों ने मेरा कटोरा उठा लिया है; जबकि वह आदमी यह दावा करता था कि वह तीन लोकों को देख सकता है। गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''बड़े अफसोस की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बात है तुम तीन लोकों के ज्ञाता होने का दावा करते हो। लेकिन तुम्हें अपने पीछे रखा हुआ कटोरा दिखाई नहीं दे रहा?''

साधसंगति गुर सबदु सुणि गुरमुखि पंथ न चाल चलंदे।
कपट सनेही फलु न लहंदे।।

भाई गुरदास जी किसी तीर्थस्थान की निन्दा नहीं करते और न ही वहाँ जाने के लिए मना करते हैं। आप कहना चाहते है, ''तीर्थ स्थानों पर श्रद्धालु लोग भी जाते हैं और झूठे लोग भी जाते हैं; हँसो के साथ बगुले भी जाते हैं। बगुले चाहे कितने ही अच्छे होने का बहाना करें। लोगों को कितना ही प्रभावित करें तो भी उनकी इच्छा मछली खाने की होती है। इसलिए उन पर श्रद्धालु लोगों का रंग नहीं चढ़ता।''

जिस तरह लोग खास अवसर पर तीर्थ स्थानों पर इकट्ठे होते हैं उसी तरह जब सतगुरु इस संसार में आते हैं वे सतसंग करते हैं। सतगुरु के सतसंग में अनेक जातियों व अनेक देशों के लोग आते हैं। सतगुरु सभी के लिए सतसंग करते हैं। झूठे ढोंगी भी सतसंग में आते हैं। वे आँखें बंद करते हैं अभ्यास करते हैं और सतगुरु का सेवक होने का बहाना करते हैं लेकिन उन पर सतसंग का रंग नहीं चढ़ता; उनका गुरु के प्रति प्यार नहीं होता। वे प्रभु भक्ति करने की प्ररेणा नहीं लेते, आँखें बंद करके श्रद्धालु बनने का ढोंग करते हैं वे भक्ति करने की बजाय इच्छाएं रखते हैं। उन पर सतगुरु का रंग नहीं चढ़ता वे बगुले की तरह अंदर से बहुत कठोर होते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सारी दाल पकावे अग्नि, मोठ कोकडू रिझदा ना।

जब हम दाल बनाते हैं उसमें से कुछ दाने कोकडू भी होते हैं जो गलते नहीं। हम सब दानों में एक समान पानी डालते हैं और एक जैसी आग पर रखते हैं, लेकिन कोकडू मोठ नहीं गलते; वे कठोर ही रहते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इसी तरह मनमुख भी गुरुओं के पास आते हैं सतसंग सुनते हैं। गुरु सब पर दया दृष्टि डालते हैं, सबको एक जैसा प्यार देते हैं। लेकिन हम पिछले जन्मों के बुरे कर्मों के कारण उनके वचनों पर अमल नहीं करते, दया प्राप्त नहीं करते। हमारे हृदय कोकडू मोठ की तरह नरम नहीं होते।

सावणि वण हरीआवले वुठै सुकै अकु जवाहा।

अब भाई गुरदास जी सुपात्र और कुपात्र लोगों के बारे में बताते हैं कि उनमें क्या अंतर है? आप जानते हैं कि सावन में सभी पेड़ पौधे हरे–भरे हो जाते हैं और नए पौधे भी उग जाते हैं लेकिन आक व जवासा जैसे पौधे हरे होने की बजाय सूख जाते हैं।

त्रिपति बबीहे स्वाँति बूँद सिप अंदरि मोती उमाहा।
कदली वणहु कपूर होइ कलरि कवलु न होइ समाहा।
बिसीअर मुहि कालकूट होइ धात सुपात्र कुपात्र दुराहा।

स्वाँति बूँद में एक ही गुण होता है लेकिन यह गिरने वाले स्थान पर निर्भर करता है कि इसका क्या रूप होता है? कहा जाता है कि अगर पपीहा स्वाँति बूंद पीता है तो उसे एक साल तक प्यास नहीं लगती। वही स्वाँति बूँद सीप में पड़े तो मोती बन जाती है। वही स्वाँति बूंद जब केले में गिरती है यह कपूर बन जाती है जोकि बहुत कीमती होता है। वही स्वाँति बूंद जब बंजर धरती पर गिरती है तो बेकार चली जाती है। अगर साँप स्वाँति बूंद को पी लेता है तो यह विष बन जाती है। इस तरह स्वाँति बूंद को ग्रहण करने वालों में अंतर होता है उनके अनुसार ही उस बूंद का गुण बदल जाता है लेकिन बूंद एक ही होती है।

साधसंगति गुर सबदु सुणि सांति न आवै उभै साहा।
गुरमुखि सुख फलु पिरम रसु मनमुख बदराही बदराहा।
मनमुख टोटा गुरमुख लाहा।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतगुरु के वचन सबके लिए एक जैसे होते हैं, सतगुरु की दया सबके लिए समान होती है लेकिन यह सब हमारी ग्रहण शक्ति पर निर्भर होता है कि हमने अपने बर्तन को किस तरह तैयार किया है। सतगुरु के वचन, दया व कृपा हमारे बर्तन व ग्रहण शक्ति के अनुसार प्रभाव डालते हैं।

प्यारेयो! 'नामदान' के समय देखा गया है कि सभी को एक जैसा अनुभव नहीं होता। पति–पत्नी को भी एक जैसा अनुभव नहीं होता क्योंकि सबके कर्म एक जैसे नहीं होते। महाराज सावन सिंह जी अक्सर अपने सतसंगों में खोलकर समझाया करते थे, ''हमारा बर्तन और हमारी ग्रहण शक्ति एक जैसी नहीं होती। हम अपने पिछले कर्मों के अनुसार सतगुरु से अलग–अलग चीज़ें प्राप्त करते हैं।''

सुपात्र सदा अपने अंतर में देखते हैं। वे अपने अवगुणों और कमियों की तरफ देखते हैं; कभी गुरु में दोष नहीं देखते और सदा गुरु की मौज में ही रहते हैं। कुपात्र कभी अपने अंतर में नहीं देखते उन पर पिछले जन्मों के बुरे कर्मों का प्रभाव होता है, वे सदा गुरु में ही दोष ढूंढते हैं। ऐसे लोग जब बीमार होते हैं तो वे गुरु को ही दोष देते हैं अगर उनके जीवन में कोई गड़बड़ हो जाती है तो भी वे गुरु को ही दोष देते हैं। वे गुरु को बुरा कहकर परमात्मा पर पत्थर फैंकते हैं। वे खुद के दोषों को नहीं ढूंढते परमात्मा की मौज में खुश नहीं रहते।

जैसे लैम्प के सभी कलपुर्जे ठीक हैं उसमें तेल भी है। आपको केवल बत्ती जलानी है; रोशनी प्राप्त हो जाएगी। इसी तरह सुपात्र को सतगुरु के संपर्क में आने की ही जरूरत होती है। सुपात्र ग्रहण शक्ति वाले होते हैं। ऐसे लोगों का बर्तन परिपूर्ण करने में सतगुरु को थोड़ा ही समय लगता है।

सुपात्र गुरु के वचन को परमात्मा का वचन समझते हैं। वे जैसे ही गुरु के पास आते हैं, थोड़े ही समय में कामयाब हो जाते हैं। इसी तरह एक ऐसा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लैम्प है जिसके कलपुर्जे सही काम नहीं कर रहे, उसका शीशा काला है और उसमें तेल भी नहीं है तो सबसे पहले आपको उसका शीशा साफ करना पड़ेगा फिर उसमें तेल डालकर उसके कलपुर्जे ठीक करने पडेंगे। इतना समय लगाकर ही आप उस लैम्प से रोशनी प्राप्त कर सकेंगे। प्यारेयो! जो इस तरह के लैम्प हैं, उन्हें थोड़ा सा समय लगेगा।

मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ कि मेरा प्यारा परमपिता खुद मेरे घर आया। मैंने उस समय अपने गुरु से कोई दुनियावी वस्तु नहीं माँगी और न ही मेरे दिल में कोई दुनियावी विचार था। आपने मुझे जो कहा मैंने वह कर लिया, आपकी दया से आपने खुद ही मुझसे सब कुछ करवाया।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''इसी तरह सुपात्र – गुरुमुख अपने शुभ कर्मों से गुरुओं के पास आते हैं। वे जब गुरुओं के पास आते हैं कामयाब हो जाते हैं और काफी फायदा उठाते हैं। लेकिन मनमुखों पर बुरे कर्मों का प्रभाव होता है, वे भटकते फिरते हैं; सतगुरु से फायदा नहीं उठाते।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि गुरुमुख मनुष्य जामें में लाभ कमा लेते हैं और मनमुख पूंजी को गँवा देते हैं।

वण वण विचि वणासपति इको धरती इको पाणी।
रंग बिरंगी फुल फल साद सुंगध सनबंध विडाणी।

अब भाई गुरदास जी हमें दूसरा उदाहरण देकर समझाते हैं, ''आप देखते हैं कि जंगल के सभी हिस्सो को एक जैसा पानी मिलता है। एक जैसी धूप और हवा मिलती है। फिर भी हर पौधा एक जैसा नहीं होता, उनके फूल अलग–अलग रंगो के होते हैं और उन सबकी खुशबू भी अलग–अलग तरह की होती है।''

ऊचा सिंमलु झंटुला निहफलु चीलु चढ़ै असमाणी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भाई गुरदास जी कहते हैं कि सेमल और चीड़ के पेड़ों को एक जैसा पानी मिलता है। ये दोनों बहुत ऊँचे होते हैं। लेकिन यह लोगों के लिए बेकार होते हैं क्योंकि इनके फल में न स्वाद होता है और न सुगंध होती है। इसी तरह मनमुख चाहे कितना सुंदर व धनवान हो वह जब भी बोलेगा लोगों की भावनाओं को चोट पहुँचाएगा या दूसरों के लिए परेशानी पैदा करेगा; वह दूसरों के कोई काम नहीं आता।

जलदा वाँसु वढाईऐ वंझुलीआँ वजनि बिबाणी।
चंदन वासु वणासपति वासु रहै निरगंध रवाणी।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि बाँस का पेड़ बहुत ऊँचा होता है लेकिन दुखों से भरा हुआ होता है। जब काटकर इसकी बाँसुरी बनाई जाती है उस रूप में भी यह बाँसुरी दुख भरी कहानियाँ गाती है। चंदन का पेड़ इतना ऊँचा नहीं होता फिर भी सुगंध देता है और चंदन की सुगंध चारों और फैल जाती है। जबकि बाँस का पेड़ चंदन के पास ही उगता है फिर भी बाँस में चंदन की खुशबू नहीं समाती।

साधसंगति गुर सबदु सुणि रिदै न वसै अभाग पराणी।
हउमै अंदरि भरमि भुलाणी।।

भाई गुरदास ने मनमुख की तुलना सेमल, चीड़ और बाँस के पेड़ से की है कि ये पेड़ बहुत ऊँचे होते हैं लेकिन फलदायक नहीं होते। गुरुमुख की तुलना चंदन के पेड़ से की है कि चंदन का पेड़ चारों तरफ सुगंध फैलाता है। इसी तरह गुरुमुख अपने सतगुरु का प्यार फैलाते हैं और उनका यश गाते हैं। गुरुमुख दूसरों को भी सतगुरु की भक्ति में अपने जैसा सुगन्धित बना देते हैं, दूर–दूर से लोग उनकी तरफ खिंचे चले आते हैं।

चंदन का पेड़ सभी पेड़ों को खुशबू देता है। बाँस को छोड़कर जो पेड़ चंदन के नज़दीक होते हैं वे चंदन की खुशबू को ग्रहण कर लेते हैं। इसी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तरह गुरुमुख प्यार और नाम की खुशबू फैलाते हैं जो भी उनके पास आता है वे इसे ग्रहण करते हैं और वे भी सुगंध से परिपूर्ण हो जाते हैं लेकिन मनमुख अहंकार से भरे होते हैं वे भक्ति भी दूसरों को प्रभावित करने के लिए करते हैं। वे गुरुमुख से आने वाली खुशबू को अपने अंदर जज्ब नहीं करते। जिस तरह बाँस चंदन की खुशबू से वंचित रहता है उसी तरह मनमुख भी बिना नाम की खुशबू से रहते हैं।

रसल परकिन्स *'आसा जी की वार'* पुस्तक पर बहुत मेहनत कर रहा है। गुरु नानकदेव जी ने *आसा जी की वार*[1] में अहंकार का बहुत ही सुंदर चित्र खींचा है कि मनुष्य अहंकार में आता है अहंकार में जाता है अहंकार में जीता और अहंकार में ही मरता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ।
हउ विचि जमिआ हउ विचि मुआ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्यारेयो! अहंकारी सदा यही कहता है कि मैं दूसरे से ज्यादा जानता हूँ। मैं पुराना सतसंगी हूँ, मैंने बहुत सी पुस्तकें पढ़ी हैं और बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। लेकिन उसने कुछ नहीं किया होता। वह कुछ नहीं जानता इसलिए अहंकारी आदमी सदा ही यह दावा करता है कि वह दूसरों से बढ़कर है। लेकिन सन्तमत में ऐसा नहीं होता।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप इस बात की तरफ ध्यान मत दें कि महात्मा का सतसंग कितने लोग सुन रहे हैं? आपको यह देखना है कि उसका असर कितने लोगों पर पड़ता है? कितने लोग गुरु के वचनों पर चल रहे हैं? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि स्कूल में कितने ज्यादा विद्यार्थी पढ़ते हैं? आपको यह देखना है कि कितने विद्यार्थी पास होते हैं?'' अहंकार रूहानियत को खत्म कर देता है। महात्मा सदा हमें अहंकार की बीमारी से बचने की चेतावनी देते हैं।

शुरू की पंक्तियों में भाई गुरदास ने हमें संसार के उदाहरण दिए हैं क्योंकि हम सांसारिक उदाहरणों से आसानी से समझ सकते हैं। आखिर की कुछ लाइनों में आपने मनमुखों–कुपात्रों के बारे में बताया है कि ये लोग सतगुरु के पास आते हैं। सतसंग भी सुनते हैं, आँखे बंद करके भजन–अभ्यास भी करते हैं। लेकिन ये बगुले की तरह होते हैं। कुपात्र मंद कर्मों के कारण गुरुओं की शिक्षा को स्वीकार नहीं कर करते।

हमारे सतगुरु कहा करते थे, ''अहंकारी आदमी सदा यह सोचता है कि वह सही मार्ग पर है और दूसरे लोग गलत हैं।''

हम अपने अंतर में अपनी कमियों को देखें तो ही हम अपने दोषों को दूर कर सकते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

दोख पराया देखकर, चलत हंसत हंसत।
आपदा कभी न देखया, जिसदा आदि ना अन्त।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी : *कहते हैं कि गुरु के लिए प्यार और डर होना चाहिए। जैसे गुरु के प्रति प्यार की दात होती है, क्या वैसे ही डर भी गुरु की दात होती है?*

बाबा जी : हम प्यार का गलत इस्तेमाल करते हैं इसलिए हम डर को नहीं समझते। अगर हमारा दुनियां में किसी मामूली रिश्तेदार के साथ प्यार है, वह हमारे घर आए तो हम उसकी नाराजगी से डरते हैं कि कहीं हमसे कोई ऐसी हरकत न हो जाए जिससे वह हमसे नाराज हो जाए!

जब गुरु का प्यार हमारे अंदर जाग पड़ता है दुनियां का प्यार कम हो जाता है। हमारे अंदर गुरु का डर पैदा हो जाता है कि हमारा गुरु देख रहा है। वह हमसे नाराज न हो जाए इसलिए हम कोई बुरा काम नहीं करते।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक महात्मा के दो नामलेवा सेवक थे। एक सेवक ज्यादा बातें और दूसरा सेवक अभ्यास ज्यादा करता था। महात्मा देखना चाहते थे कि मेरी तालीम को इन्होंने समझा भी है या नहीं, मेरे जाने बाद ये गद्दी के लिए झगड़ते न रहें?

महात्मा ने दोनों सेवकों को एक–एक कबूतर देकर कहा, ''जहाँ कोई न देखता हो इसे वहाँ कत्ल करके मेरे पास ले आओ।'' ज्यादा बातें करने वाले सेवक ने एक तरफ जाकर कबूतर की गर्दन दबाई और महात्मा के आगे लाकर रख दिया और कहा, ''महाराज जी! वहाँ कोई नहीं देख रहा था, मैंने इसका काम कर दिया है।''

अभ्यास करने वाला सेवक महात्मा के अंदर के राज का वाकिफ था। वह कबूतर को लेकर अंधेरी जगह पर गया। उसने कभी अपनी आँखें बाँधी कभी कबूतर की आँखें बाँधी। वह जहाँ भी जाता गुरु को देखता क्योंकि गुरु पावर उसके अंदर प्रकट थी। आखिर कई दिन बाद वह कबूतर को लेकर महात्मा के पास आकर कहने लगा, ''महाराज जी! मैं अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सका। मैं आपसे माफी चाहता हूँ क्योंकि कोई ऐसी जगह नहीं थी, जहाँ आप नहीं देख रहे थे। जब सारी दुनियां सोई हुई थी, आप तो उस समय भी जाग रहे थे।'' महात्मा ने उस सेवक को छाती से लगाया। दूसरा सेवक भी पास खड़ा देख रहा था। महात्मा ने उससे कहा, ''देख! इसने मेरी तालीम को समझा है, परमात्मा हर जगह देखता है।''

बाबा बिशनदास सुनाया करते थे कि हिन्दुस्तान में झंग जिले में हीर–रांझा हुए हैं। उनकी हिस्ट्री का आज तक किसी को पता नहीं कि वे वास्तव में हुए भी थे या कब हुए थे? क्योंकि उनकी लिखत बहुत पुरानी है। एक नौजवान मुसलमान को भूख लगी, उसने वहाँ खेलते हुए बच्चों से कहा कि अगर तुम मुझे रोटी लाकर दो तो मैं तुम्हें हीर–रांझा का गाना सुनाऊँगा।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बच्चे भागकर अपने घरों से रोटी ले आए क्योंकि उन्हें हीर–रांझा का गाना सुनने का लालच था। वह मुसलमान रोटियाँ खाकर आनंदमग्न हो गया। बच्चों ने उससे कहा, ''तूने हमारे साथ वायदा किया था कि तू हमें हीर–रांझा का गाना सुनाएगा लेकिन अब तू रोटी खाकर मग्न हो गया है।'' उस मुसलमान ने कहा, ''देखो! एक मुसलमान की छोरी थी और एक छोरा था। उनका आपस में सच्चा प्यार था। उनका प्यार विषय–विकारों वाला नहीं था। बात तो केवल इतनी सी है, बाकी सब किस्से कहानियाँ हैं।''

जो गुरु कहता है आप वह करें। आपके अंदर प्यार भी आ जाएगा और डर भी आ जाएगा। सवाल तो केवल गुरु की आज्ञा मानने का है, सब कुछ आपके अंदर से ही पैदा हो जाएगा। सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं:

रांझा रांझा करदी नी मैं आपे रांझा होई।
सद्दो नी मैंनू धीदो रांझा हीर न आखो कोई।

हीर रोजाना अपने प्रेमी रांझा को याद करके अपने आपको ही भूल गई। हीर अपनी सखी–सहेलियों से पूछती थी, ''कहीं हीर को देखा है?'' वे सखियां कहती कि तू कौन है तू हीर नहीं? हीर कहती कि मैं तो रांझा हूँ।

इसी तरह जब सेवक गुरु का दिया हुआ नाम पुकारेगा वह अपने आपको भूल जाएगा। उसे अपनी याद भूल जाएगी, वह मर जाएगा गुरु उसमें जिन्दा बोलेगा, उसे अपने आपका ख्याल ही नहीं रहता कि मैं कौन हूँ या जिसे याद करता हूँ वह कौन है? कल पाठी जी ने यह शब्द बोला था जिसके आखिर में यह था:

कृपाल कन्त सोहणा मिलया हुण हो गई अजायबो तेरी।

इस शब्द में कन्त पति को कहा गया है और अजायबो औरत है। यह बिना दाम कृपाल के हाथ में बिक चुकी है, अब इसका कोई दावा नहीं रहा। आदमी से औरत बन जाना बड़ी मुश्किल बात है क्योंकि हम इस राज़ को

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

समझते नहीं। जब हमें आत्मज्ञान हो जाता है तो हम अपने आप कह देते हैं कि मैं तेरी औरत हूँ; चाहे तू जान न जान! मैं तुझ पर सौ बार बलिहार हूँ।

जिनका पर्दा खुल जाता है उनका प्यार सच्चा–सुच्चा हो जाता है। वहाँ दुनियां के प्यार की बदबू खत्म हो जाती है फिर दुनियां की मौहब्बत पंख नहीं मारती। सिर्फ इज्जत भरा प्यार रह जाता है। उसकी अपनी मर्जी खत्म हो जाती है गुरु की मर्जी रह जाती है।

एक प्रेमी : *जिस सेवक को प्रेम की गोली लग गई। क्या वह प्रेम का घाव सहने के बाद भी इस दुनियां में उसी तरह काम करेगा जिस तरह वह पहले करता था?*

बाबा जी : वह बेहतर ढ़ग से अपनी ड्यूटी समझकर काम करेगा बल्कि दुनियां में रहता हुआ दुनियां की मैल में नहीं लिपटेगा। महाराज सावन कहा करते थे, ''यह दुनियां बुरी नहीं लेकिन इसे अपना न समझें।'' अभ्यासी आदमी दुनियां में ऐसे रहता है जैसे जल में मुरगाबी रहती है।

सन्त–महात्माओं का जीवन भी इस तरह का होता है जैसे मक्खी शहद के किनारे आकर बैठ जाती है। वह शहद खा जाती है और सूखे परों से उड़ भी जाती है। जो मक्खी शहद के बीच जाकर बैठती है, वह शहद भी नहीं खा सकती और उड़ भी नहीं सकती। टाँगें निकालती है तो पंख फँस जाते हैं; पंख निकालती है तो टाँगें फँस जाती हैं। जीवन का असली आनंद तो सन्त–महात्मा ही लेते हैं क्योंकि उनके अंदर प्यार जाग जाता है।

ईसा मसीह के अंदर प्यार जागा, उसने सूली को सूली नहीं समझा। सूली का नाम लेने से छः फुट की देह थर–थर काँपने लगती है। उन्होंने सूली को चूमा, सूली पर चढ़े यह प्रेम ही था। **प्रेम सुख–दुख में फर्क नहीं रहने देता। दुनियादारों को सुख मिल जाता है तो वे परमात्मा को भूल जाते है, दुख आने पर रोने लग जाते हैं।**

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुरु अर्जुनदेव जी को प्रेम का तमाचा लगा आपने लोक–लाज की परवाह नहीं की। उस समय की हकूमत ने आपको गर्म लोहे पर बिठाया, सिर पर गर्म रेत डाली फिर भी आपने किसी को बद्दुआ नहीं दी। आपका एक मुसलमान दोस्त मियाँ मीर था। उसने आपके पास आकर कहा, ''गुरुदेव! आपके साथ इतना जुल्म देखकर बहुत दुख हो रहा है आप मुझे आज्ञा दें तो मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा सकता हूँ।'' आपने कहा, ''मियाँ मीर! यह तो मैं भी कर सकता हूँ लेकिन दुख देने वाले भी तो अपने ही हैं।'' आपको सारी दुनियां ही अपनी दिखने लगी थी क्योंकि आपके अंदर प्यार जाग गया था।

गुरु गोविंद सिंह जी का एक सेवक भाई मनी सिंह बचपन में ही आपके पास आया। गुरु गोविंद सिंह जी ने उसे लंगर के बर्तन साफ करने की सेवा दी, वह बहुत अच्छे ढ़ग से निस्वार्थ सेवा करता था। उसके दिल में कभी ईर्ष्या नहीं आई। वह नियम से अपना भजन–अभ्यास करता था। वह गुरु गोविंद सिंह जी के जीवनकाल के बाद भी रहा। उस समय की हकूमत ने गुरु गोविंद सिंह के सेवकों को काफी कष्ट दिए। भाई मनी सिंह जब हुकूमत की पकड़ में आया तो उसका अंग–अंग काटने के लिए कहा गया।

सिक्ख इतिहास की यह एक मशहूर कहानी है। जब जल्लाद आया तो मनी सिंह ने अपने दोनों हाथ काटने के लिए आगे कर दिए। जल्लाद ने भी सोचा कि यह जिन्दा इंसान है, ऐसा करना ठीक नहीं लेकिन मनी सिंह ने कहा, ''तुम्हें जो हुक्म मिला है वही करो।''

जल्लाद ने मनी सिंह के हाथ काट दिए, लेकिन उसने कोई बद्दुआ नहीं दी। यह भी प्यार की एक मिसाल है। मनी सिंह की लेखनियों से पता लगता है कि उसका पर्दा खुला हुआ था वह बह्मज्ञानी था, परमात्मा से मिला हुआ था। गुरु गोविंद सिंह जी उसके अंदर प्रकट थे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

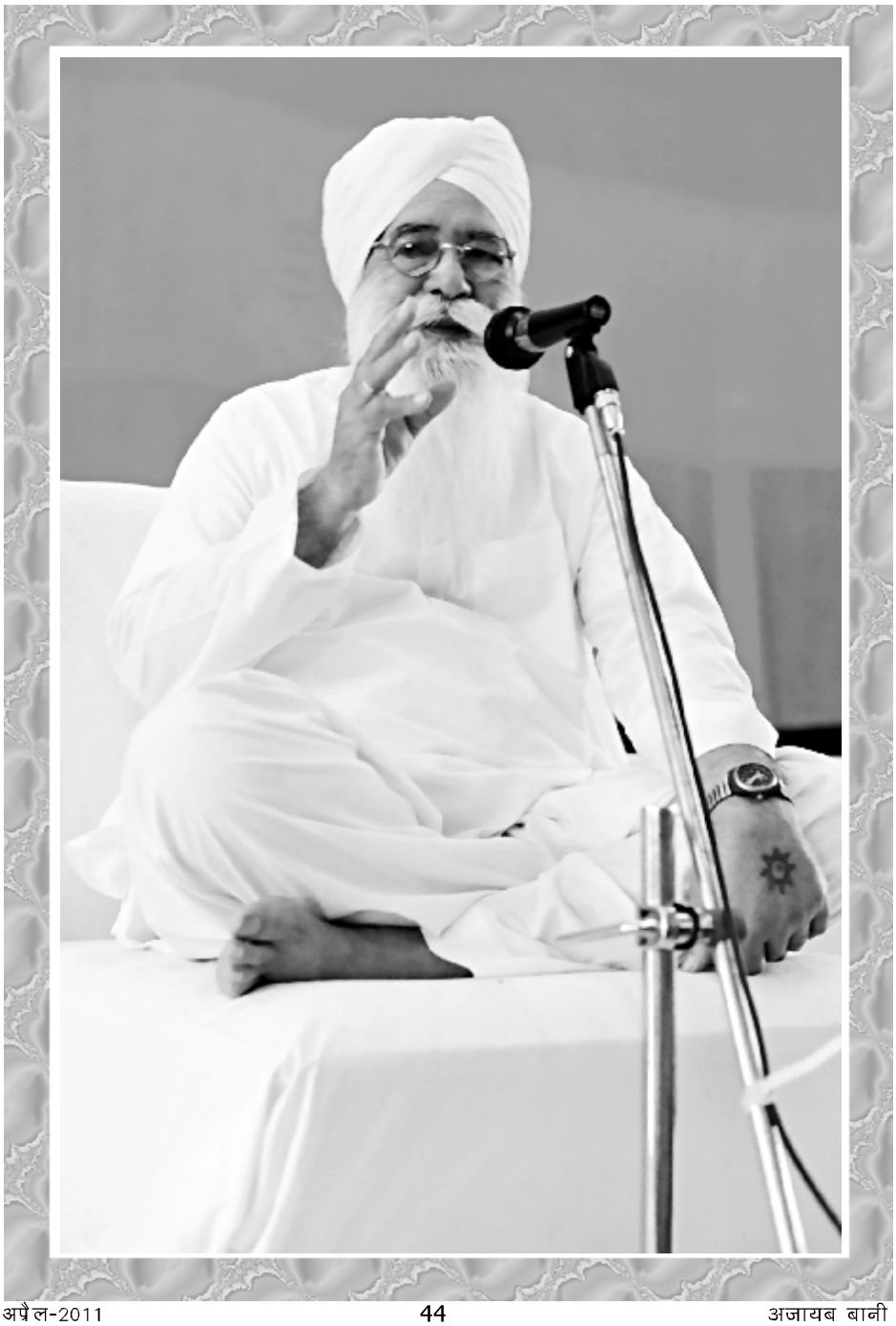

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुरु गोविंद सिंह जी की किसी समाज के साथ लड़ाई नहीं थी, न ही आपका मकसद हिन्दुस्तान पर राज्य करना था। उस समय हिन्दुस्तान पर कहर छाया हुआ था। मुगलों की हुकूमत बड़ी सख्त थी। उन्होंने बहुत से साधुओं का भी कत्ल किया, लोगों की लड़कियों की इज्जत सुरक्षित नहीं थी। उस समय गुरु गोविंद सिंह ने जुल्म की खातिर तलवार उठाई। हर समाज के आदमी आपके सेवक थे। आपकी किसी के साथ दुश्मनी नहीं थी। आपने सारी दुनियां को प्यार दिया और अपनी बानी में यही कहते हैं:

साच कहूं सुन लेयो सभी जन, जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो।

औरंगजेब बड़ा सख्त बादशाह था। उसने अपने भाईयों पर भी रहम नहीं किया। अपने बड़े भाई का कत्ल किया और अपने पिता को कैद करके वह दिल्ली के तख्त पर बैठा। गुरु नानक साहब कहते हैं:

भय काहूं को देत न भय मानत आन।

सन्त किसी को भय नहीं देते और न ही खुद भय मानते हैं क्योंकि उनके अंदर प्यार जाग पड़ता है। गुरु गोविंद सिंह जी ने तलवार उठाकर उस हुकूमत की ऐसी जड़ हिलाई कि हिन्दुस्तान में वह हुकूमत दोबारा कायम नहीं हो सकी।

जब शाही फौजों और गुरु गोविंद सिंह के सेवकों की मुठभेड़ हुई तो बड़ी कत्लोगारत हुई। गुरु गोविंद सिंह जी ने भाई कन्हैया को ड्यूटी दी कि जो जख्मी हो जाए, तू उन्हें पानी पिला। आपने यह नहीं कहा था कि पानी केवल मेरे सेवकों को ही पिलाना है या शाही फौजों को नहीं पिलाना है।

कन्हैया के अंदर भी गुरु प्रकट था। उसने पानी पिलाने में कोई भेदभाव नहीं रखा। उसने सबके साथ एक जैसा प्यार रखा। सबको पानी पिलाता रहा, लेकिन जिनका पर्दा नहीं खुला था; उन्होंने गुरु गोविंद सिंह जी के पास आकर शिकायत की, ''महाराज जी! हम शाही फौजों को मारते

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हैं, वे जख्मी होकर गिर जाते हैं लेकिन भाई कन्हैया उन्हें पानी पिलाकर फिर खड़ा कर देता है वे फिर हमारे साथ लड़ते हैं।''

गुरु गाविंद सिंह जी ने भाई कन्हैया को बुलाया और पूछा, ''ये लोग तेरी शिकायत कर रहे हैं। तू शाही फौजों को पानी पिलाता है?'' कन्हैया ने कहा, ''महाराज जी! मुझे तो कोई शाही फौज का आदमी नज़र नहीं आता, मुझे तो सब आपका ही रूप नजर आते हैं।'' गुरु साहब उसके प्यार और तालीम को देखकर खुश हुए। आपने उसे दवाई बूटी भी दी और कहा, ''तू जंग में जख्मी लोगों की मलहम–पट्टी भी किया कर।'' इसका नाम प्यार है; दोस्त और दुश्मन में परमात्मा दिखता है। ऐसी बात करनी तो आसान है लेकिन इसे जीवन में ढ़ालना बड़ा मुश्किल है।

मैं बताया करता हूँ कि जब आत्मा भँवरगुफा में प्रवेश करती है तो वहाँ जाकर मस्त हो जाती है। फिर उसमें से आवाज निकलती है कि जो परमात्मा है मैं वही हूँ। भँवर गुफा सच्चखंड का दरवाजा है; वहाँ पहुँचकर आत्मा परमात्मा से मिलने की कोशिश करती है।

जब महान मंसूर ने यह दावा किया कि जो परमात्मा है। मैं वही हूँ तो शराह के लोगों ने मंसूर को कत्ल करने का हुक्म दे दिया कि इसने खुदा की बराबरी की है। जब मंसूर को कत्ल करने लगे पहले उसकी आँखें निकालने लगे तो परमात्मा ने मंसूर से पूछा, ''क्या मैं तेरी रक्षा करूँ? अगर तू कहे तो मैं इन्हें सजा दूँ।'' उस समय मंसूर ने गुरु परमात्मा के आगे विनती की, ''हे परमात्मा! अगर तू दया करना चाहता है तो इन जीवों पर दया कर ताकि इन्हें पता लग जाए कि मैं क्या हूँ?''

अब आप सोच लें! यह प्यार ही था जो कत्ल कर रहा था उसकी खातिर कत्ल होने वाला प्रार्थना करे और परमात्मा से दया माँगे की तू इनके अंदर भी प्यार पैदा कर।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दुनियां तो अदालत में जाकर एक अँगूठा लगाती है, लेकिन जिनके अंदर प्यार जाग जाता है; ऐसा प्रेमी तो अपनी दसों अंगुलियाँ अपने गुरु के हाथ में सौंप देता है कि मैं बिना दाम तेरा हो चुका हूँ। अब तेरी मर्जी है तू मुझे भूखा रख, प्यासा रख! इज्जत दे बेइज्जती दे इसमें मेरा क्या है? इज्जत भी तेरी है, बेइज्जती भी तेरी है। सुख भी तुझे है, दुख भी तुझे है।

ऐसा कह लेना तो बहुत आसान है लेकिन इसे अपने जीवन में ढ़ालना बड़ा मुश्किल है। हम जब तक जीते जी मरना नहीं सीख लेते पूरा अभ्यास नहीं करते तब तक ऐसी हालत नहीं बनती। जीते जी मरने का भाव है, प्रेमी गुरु का रूप हो जाता है वह खुद खत्म हो जाता है उसके अंदर गुरु जाग पड़ता है, फिर गुरु ही उसके अंदर बैठकर बोलता है। परमात्मा प्यार है हमारी आत्मा उस प्यार का एक कण है; अभ्यास करने से प्यार जागता है।

यह कुदरती असूल है कि जिसके साथ हमारा प्यार होता है हम उसे बिना याद किए ही याद करते हैं। हर समय उसकी शक्ल आँखों के आगे रहती है। उसका नाम अपने आप ही जुबान पर आना शुरु हो जाता है जिसके साथ प्यार होता है। उसका डर भी अपने आप उत्पन्न होना शुरु हो जाता है कि कही यह हमसे नाराज न हो जाए!

सन्त–महात्मा प्यार के सागर होते हैं। वे प्यार का संदेश लेकर ही इस मण्डल पर आते हैं, उन्हें कोई पराया नजर नहीं आता। सारा विश्व ही उनका अपना घर होता है; सब आत्माएं उनकी अपनी अंश होती हैं। वे सबको प्यार का संदेश देते हैं क्योंकि हम प्यार से बिछुड़कर ही एक–दूसरे के जानी दुश्मन बने हुए हैं। आज जो कुछ भी हो रहा है यह सब प्यार से दूर जाने के कारण ही हो रहा है। **महाराज कृपाल अक्सर कहा करते थे, ''अगर आप किसी के घर में प्यार का एक तिनका डाल दें तो वह घर स्वर्ग बन जाएगा।''** कबीर साहब कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कबीरा खड़ा बाजार में सबकी माँगे खैर।
न काहू स्यों दोस्ती न काहू स्यों बैर।

हमें भी चाहिए कि अभ्यास करें अभ्यास करने से हमारे अंदर प्यार पैदा होगा और हम भी प्यार का रूप हो जाएँगे। परम पिता कृपाल प्यार का सागर थे। आपने हर समाज को इकट्ठा किया सबको प्यार का संदेश दिया। मैं बचपन से प्यार का पुजारी रहा हूँ, मुझे भी विरासत में प्यार ही मिला है।

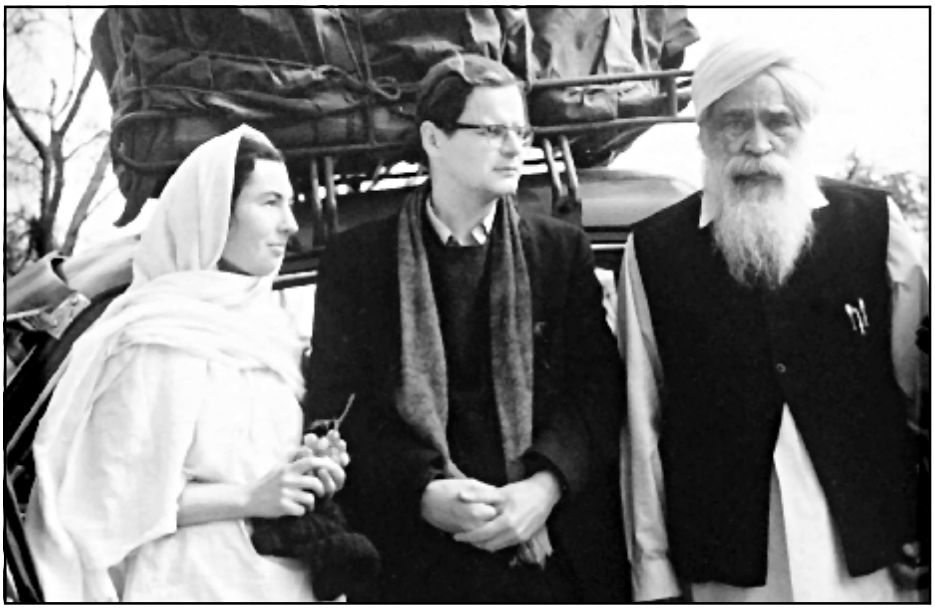

शुरु में जब रसल परकिन्स मेरे पास आया। पश्चिम जाने की बातचीत हुई तो मैंने इससे यही कहा, ''हमने किसी की नुक्ताचीनी नहीं करनी परम पिता कृपाल का प्यार पवित्र है, हमने उसे गंदा नहीं करना। अगर कोई हमारी निन्दा या आलोचना करे तो हमने उसकी नकल नहीं करनी। हमने अपने गुरु का प्यार लोगों को बताना है।''

मैं रसल परकिन्स का धन्यवाद करता हूँ कि इसने मेरी आज्ञा का पालन किया क्योंकि ऐसे भी कई मौके भी आए जिसमें इसे मजबूर होना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पड़ता था। लेकिन मैं इसे इसका वायदा याद करवाता रहा कि हमने किसी की आलोचना नहीं करनी। हम एक महान गुरु के बच्चे है उसकी महिमा बयान नहीं की जा सकती। उसने हमें प्यार बख्शा है। यह उसका प्यार और दया ही है कि हम उसके प्यार में मस्त हैं।

जब महान गुरु संसार से चले जाते हैं तो हम उनके प्यार को भूल जाते हैं। हमें अभ्यास करके अपने अंदर प्यार पैदा करना चाहिए। हमारे गुरुओं ने हमें प्यार का ही संदेश दिया है।

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे लड़ना–झगड़ना नहीं सिखाते। एक माली बूटे लगाता है और दूसरा आकर उन बूटो को पानी देकर हरा–भरा कर लेता है। एक महात्मा 'नाम' देता है और दूसरा महात्मा उन्हें सतसंग का पानी देकर अभ्यास करवाकर उसी जगह ले जाता है जिस प्यार के सागर से वह आया होता है।

बीमारी भजन में बाधा डालती है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम प्रयास करना छोड़ दें। शब्द-धुन बीमारी के समय बंद नहीं होती, भजन करना और शब्द-धुन सुनना आत्मा का काम है।

आत्मा कभी बीमार नहीं होती शरीर को ही तकलीफ होती है। वास्तव में बीमारी के समय परमात्मा की विशेष कृपा होती है; शब्द-धुन अधिक स्पष्ट हो जाती है। अगर बीमारी के समय आसन लगाकर बैठना संभव नहीं तो लेटकर ही भजन करना चाहिए।

-महाराज सावन सिंह जी-

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से इस साल भी दिल्ली में 20,21 व 22 मई 2011 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सन्तों के वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,
भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार
(नज़दीक पीरागढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087

राकेश शर्मा - 9810212138 : सोनू सरदाना - 9810794597 : सुरेश चोपड़ा - 9818201999

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com